पूज्य लालचंदभाई का प्रवचन
शिकोहाबाद, ता. ११-४-१९८९
श्री समयसार, गाथा २७८-२७९, प्रवचन नंबर P१७

ये समयसार जी शास्त्र है। इसका बंध अधिकार, गाथा २७८-२७९ जोड़ा है! ऊपर का एक श्लोक भी है। १७४ नंबर का श्लोक है। वो श्लोक प्रश्नरूप है। उत्तर २७८-२७९ नंबर की गाथा है। वो उत्तररूप है। प्रश्न तो इसमें है, श्लोक बोलो बेन!

रागादयो बन्धनिदानमुक्ता -
स्ते शुद्धचिन्मात्रमहोऽतिरिक्ताः ।
आत्मा परो वा किमु तन्निमित्त-
मिति प्रणुन्नाः पुनरेवमाहुः ॥१७४॥

ये प्रश्न बहुत अच्छा है! ये **रागादिको बंध का कारण कहा।** राग द्वेष मोह का जो परिणाम विकारी भाव कषाय भाव है, उसको नया बंध का कारण कहा। भावबंध है, तो भावबंध नया कर्म का निमित्त कारण होता है, रागादि। कर्म के बंध का कारण तो कर्म जड़ है। उसका निमित्त कारण राग द्वेष मोह है। जो जीव का विकृत परिणाम है। तो रागादि को बंध का कारण कहा। और उसके उपरांत जिसने यानि राग-द्वेष-मोह को मिथ्यात्व के परिणाम को, **शुद्धचैतन्यमात्र ज्योति से भिन्न कहा-** ये क्या बात है? आत्मा ही बंध का कारण है, नया कर्म बंध का कारण. भगवान आत्मा बंध का कारण नहीं है। कभी? कि जब मिथ्यात्व है, तभी। क्या कहा? परिणाम में मिथ्यात्व राग द्वेष मोह कषाय भाव है, तभी भी आत्मा कर्म के बंध का कारण नहीं होता है। किसी को भी। भव्य-अभव्य किसी को भी। तो बंध का कारण कौन? कि राग द्वेष मोह बंध का कारण है, ऐसा कहा। ऐसा हमने स्वीकार भी किया, माना।

मगर मेरा एक प्रश्न है कि बाद में आप ऐसा कहते हैं कि जो राग बंध का कारण है, वो राग से शुद्ध चैतन्यज्योति मात्र से तो भिन्न है। राग बंध का कारण और बंध का कारण वो तो राग, वो राग शुद्धात्मा से तो भिन्न है, ऐसा कहा आपने। तो तब रागादि का निमित्त आत्मा है कि दूसरा कोई? जो राग उत्पन्न होता है, **तब फिर उस रागादिकका निमित्त आत्मा है या कोई अन्य?** पहले क्या कहा कि राग नया बंध का कारण, वो राग से भगवान आत्मा भिन्न है। वो तो ठीक!

अभी दूसरा प्रश्न आया कि राग उत्पन्न होता है तो आत्माश्रित होता है कि पराश्रित? राग की उत्पत्ति का निमित्त कारण कौन? आत्मा निमित्त कारण, मिथ्यात्व की उत्पत्ति में मिथ्यात्व का जन्मस्थल है तो होता है, मगर उसमें कारण कोन आत्मा कारण है कि दर्शन मोह आदि निमित्त कारण है? ऐसा पूछा। दो प्रश्न आया।

एक तो राग से नया बंध होता है। ऐसा आपने कहा वो तो ठीक। स्वीकार किया। अब बाद में आप फरमाते हैं कि राग से आत्मा भिन्न है, एक बात। दूसरा बात यह कि जो राग की उत्पत्ति होती है, उसका

कारण कौन यानि नियमरूप कारण कौन? यानि निमित्तरूप कारण कौन? दो प्रश्न इसमें हैं, गर्भित। प्रश्न तो ऐसा पूछा कि राग का ये निमित्त आत्मा है कि राग का निमित्त परद्रव्य है? ऐसा प्रश्न है। तो राग की उत्पत्ति में निमित्त कारण तो समझे मगर उसका नियमरूप कारण क्या है? आत्मा है? ऐसा भी प्रश्न गर्भित में आयेगा। खुलासा आयेगा। आत्मा है कि दूसरा कोई पदार्थ राग की उत्पत्ति का? राग निमित्त है नया कर्म के लिये। वो राग उत्पन्न होता है, वो आत्मा से भिन्न है। तो राग की उत्पत्ति में आत्मा कारण है कि परद्रव्य कारण है? और कोई? ऐसा प्रश्न आया!

उसमें नियमरूप कारण क्या? कि जो आत्मा राग का निमित्त हो मिथ्यात्व का, तो कभी मिथ्यात्व का अभाव होता नहीं। और जो नियमरूप कारण कर्म का उदय हो तो पराधीन पर्याय हो गई। वो भी नियमरूप कारण निश्चय कारण नहीं है। आहाहा! व्यवहार कारण है मगर निश्चय कारण नहीं है। तो निश्चय कारण कर्म का उदय भी नहीं और आत्मा का अस्तित्व वो भी नियमरूप कारण नहीं है। उसका राग की उत्पत्ति का मिथ्यात्व की उत्पत्ति का आत्मा कारण है कि परद्रव्य कारण है- ऐसा प्रश्न आया। ऐसा शिष्य का प्रश्न से प्रेरित होकर आचार्य भगवान फिर से उसका उत्तर देते हैं। ऊपर के प्रश्न उत्तर में आचार्य भगवान् गाथा कहते हैं।

ज्यों स्फटिकमणि है शुद्ध, आप न रक्तरूप जु परिणमे ।
पर अन्य रक्त पदार्थसे, रक्तादिरूप जु परिणमे ।।२७८।।
त्यों 'ज्ञानी' भी है शुद्ध, आप न रागरूप जु परिणमे ।
पर अन्य जो रागादि दूषण, उनसे वह रागी बने ।।२७९।।

गाथा बहुत मार्मिक है। आत्मा शुद्ध है, और आत्मा परिणमन नहीं करता है। त्रिकाली शुद्धात्मा राग की उत्पत्ति का कारण नहीं है। वो उसका जो परिणमन है, उत्पाद-व्यय, उत्पाद-व्यय, उत्पाद-व्यय, वो भी राग की उत्पत्ति का कारण नहीं है। जो उत्पाद-व्यय राग की उत्पत्ति का कारण हो, तो सिध्द भगवान में उत्पाद-व्यय होता है, उसमें राग की उत्पत्ति होना चाहिए। भगवान आत्मा भी राग की उत्पत्ति का कारण नहीं और उत्पाद-व्यय जो पर्याय का स्वभाव है, पर्याय का स्वभाव भी विभाव का कारण नहीं है।

ये तो समयसार गूढ है, सब इसमें लिखा है। उसका गाथा का अर्थ- जेम, **जैसे स्फटिकमणि शुद्ध होनेसे**, अनादि अनंत स्फटिक मणि स्वभाव से शुद्ध ही है। कभी स्फटिक मणि अशुद्ध होती नहीं है। त्रिकाल शुद्ध है, त्रिकाल शुद्ध, एक बात। **शुद्ध होनेसे रागादिरूपसे अपने आप परिणामित नहीं है।** यानि जो स्फटिक मणि में पर्याय जो लालरूप होती है, वो अपने आप लालरूप होती नहीं है। लालरूप का कारण स्फटिक मणि का शुद्ध स्वभाव नहीं है। और उसका परिणमन स्वभाव भी लाल का कारण नहीं है। ये टीका में आयेगा। समझे? आहाहा!

दो कारण का अभाव है। शुद्ध स्फटिक मणि हो तो लाल होता, ऐसा भी नहीं। और उत्पाद-व्यय परिणमन होता है इसलिए लाल हो जाता है, ऐसा भी नहीं। तो क्या है? कि सामने लाल फूल है वो उसका निमित्त कारण है। उपादान कारण तो तत्समय की पर्याय। निमित्त कारण, आहाहा! वो जो लाल जो उपादान कारण हुआ, वो तो निमित्त कारण, लाल फूल तो। लाल फूल तो निमित्त कारण। मगर उसका जो क्षणिक उपादान हुआ ना, पर्याय में लाल रंग। एक तो लाल रंग फूल में है और ये लाल रंग इधर आया।

तो ये जो लाल रंग आया पर्याय का दोष, पर्याय में, तो उसका नियमरूप कारण क्या है? कि स्फटिक मणि अपनी पर्याय स्वभाव से च्युत हो गयी। पर्याय में जो सफेदरूप परिणमन करती थी, वो लालरूप से परिणमन करती है। आहाहा! ऐसा आता है। आएगा।

परन्तु, अन्य रक्त आदि द्रव्यों के द्वारा लाल करनेमे आता है! ऐसे ज्ञानी अर्थात आत्मा, ज्ञानी का अर्थ आत्मा। ज्ञानी का अर्थ आत्मा। ज्ञानी आता है ना बहुत बार। ज्ञानी। आहाहा! अमितगति आचार्य में आता है ना? ज्ञान से जानता ज्ञानी, जानने में आ जाता है। ज्ञानी अर्थात आत्मा। ये इधर से निकला। ज्ञानी अर्थात आत्मा। ज्ञानी अर्थात आत्मा शुद्ध होने से, त्रिकाल शुद्ध है आत्मा तो, कभी अशुद्ध होता नहीं है, रागादिरूप अपने आप परिणमता नहीं है! अकेला अकेला आत्मा है और रागरूप से परिणमित होता है, मिथ्यात्वरूप से परिणमित होता है। ऐसा होता नहीं। नहीं तो वो स्वभाव हो जाए। और पर (द्रव्य) परिणमित करावे तो तो पराधीन हो जाए। ऐसा भी नहीं है। आएगा। बहुत मार्मिक बात है। मार्मिक बात है।

उत्पाद व्यय राग का कारण नहीं और ध्रुव भी राग का कारण नहीं है। आहाहा! निमित्त कारण नहीं है। समझे? शुद्धभाव रागादिरूप अपने आप परिणमता नहीं है, यहाँ निमित्त सिद्ध करना है! आहाहा! परंतु अन्य रागादी दोषों के द्वारा रागादि करनेमे आता है! निमित्तरूप। निमित्त कर्ता, निमित्त। आहाहा! निमित्त कर्ता तो कर्म का उदय। उपादान कर्ता राग की तत्समय की पर्याय। वो राग का परिणमन होता है, उसमें निमित्त कारण तो कर्म है। पर राग की उत्पत्ति का मूल कारण क्या है? कि अपने स्वभाव से च्युत हो गया। वो राग की उत्पत्ति का नियमरूप कारण है। अपने स्वभाव को भूल गया। समय समय जाननेवाला जानने में आता है। तो भी मेरे को जानने में आता नहीं है। वो च्युत हो गया आत्मा। आत्मा स्वभाव से च्युत हो गया। तो राग की उत्पत्ति नियमरूप कारण है। और निमित्त कारण कर्म का उदय है। अभी आएगा सब। खुलासा इसमें आयेगा!

टीका- आहाहा! नई बात है। भाई साहब! समझने जैसी बात है। आहाहा! माल भरा है। आहाहा! जो परिणमन स्वभाव हो तो बंध का कारण हो तो सिध्द में होना चाहिए। और परिणमन स्वभाव जो सरखा (एक जैसा) हो तो सरखा (एक जैसा) बंध होना चाहिए। आत्मा भी कारण नहीं और परिणमन स्वभाव भी कारण नहीं। आहाहा! और कर्म का उदय तो व्यवहार निमित्त कारण है। वो निश्चय कारण नहीं है। उसमें से निकलता है।

इस रीते से वास्तव में अकेला स्फटिक मणि, अकेला स्फटिक मणि पड़ा है। अकेला-अकेला लाल रूप से परिणमता नहीं है। स्वयं परिणमन स्वभाववाला होने से, दो लिया कि नहीं? टीकाकार ने निकाला उसमें से। मूल में नहीं है, परिणमन स्वभाव मूल में नहीं है। इसमें ये आता है। आहाहा! उत्पाद-व्यय तो स्वभाव है पर्याय का। दोष नहीं है। उत्पाद-व्यय तो स्वभाव है। ध्रुव भी स्वभाव है और उत्पाद व्यय भी स्वभाव है। आहाहा! उत्पाद व्यय में जो उपाधि आती है, वो बंध का कारण है। वो बंध का कारण। एक निमित्त कारण और एक च्युत होता है दो बंध का कारण।

प्रश्नः- स्वभाव विभाव वही हुआ?

उत्तरः- हाँ! वही हुआ। वो ही पर्याय। परिणमन स्वभाववाला होने पर भी, दो बात ली। अपना शुद्ध स्वभाववाला होने से, स्फटिकमणि तो शुद्ध है। उसका स्वभाव अशुद्ध होना नहीं है। पर्याय में अशुद्ध होना,

वो उसका कारण नहीं है। अशुद्ध का कारण शुद्ध नहीं होता है। पर्याय में लाल रंग होता है ना, नैमित्तिक वो नैमित्तिक भाव का कारण निमित्त है। नैमित्तिक का कारण त्रिकाल स्वभाव भी नहीं है, परिणमन स्वभाव भी नहीं है। त्रिकाल स्वभाव तो नहीं मगर वो परिणमन स्वभाव, उत्पाद-व्यय वो भी राग का कारण नहीं है। आहाहा!

अपने शुद्ध स्वभाव के कारण भी रागादिरूप परिणमित नहीं होता है। राग की उत्पत्ति में ये स्फटिकमणि भी निमित्त नहीं और उसका उत्पाद व्यय निमित्त कारण नहीं है। आहाहा! तो निमित्त कारण कौन? ऐसा प्रश्न आयेगा। अर्थात स्वयं अपनी लालास आदिरूप परिणमन वो निमित्त नहीं होने से, नहीं तो वो तो स्वभाव हो जायेगा। स्फटिक अपने आप अकेला-अकेला लालरूप में परिणमे तो वो तो स्वभाव हो जायेगा। तो कभी स्वभाव और विभाव का अभाव होता नहीं है। विभाव में निमित्त कारण है, दूसरा। नैमित्तिक में निमित्त है, स्वभाव में निमित्त नहीं होता है। त्रिकाल स्वभाव में निमित्त नहीं और उत्पाद-व्यय का निमित्त कोई जगत में नहीं होता है।

निमित्त तो नैमित्तिक में, निमित्त का भाव आता है। नैमित्तिक कब होता है? कि अपने स्वभाव से च्युत होता है, तब। मार्मिक गाथा है। बंध सिद्ध करने की गाथा है, बंध। बंध तत्व, बंध अधिकार है ना, आहाहा! मिथ्यात्व सिध्द करने की गाथा है। मिथ्यात्व का ख्याल आ जाये तो मिथ्यात्व चला जाये। मिथ्यात्व की उत्पत्ति का कारण ख्याल में आवे, तो मिथ्यात्व की उत्पत्ति होती नहीं है। मिथ्यात्व की उत्पत्ति क्या? मूल कारण क्या, दर्शनमोह तो निमित्त कारण है। मूल तो इधर से होती है मिथ्यात्व की उत्पत्ति, तो मिथ्यात्व की उत्पत्ति का कारण क्या है? कि जो अपने ज्ञान में ज्ञायक भगवान आत्मा जानने में आने पर भी, मैं आत्मा को नहीं जानता हूं। वो मिथ्यात्व का नियमरूप कारण हो गया। तब दर्शनमोह का निमित्त कारण कहेगा।

अकेला-अकेला आत्मा मिथ्यात्वरूप से परिणमता नहीं। और उसका उत्पाद व्यय रूप भी कारण नहीं है और दर्शनमोह का उदय वो तो निमित्त कारण है। वो तो बहिरंग कारण है। अंतरंग कारण क्या है कि स्वभाव से च्युत हो गया। स्वभाव से च्युत होकर ज्ञाता होने पर भी, कर्ता मानता है। ज्ञाता होने पर भी अपने आप कर्ता माना। वो स्वभाव से च्युत हो गया। वो नियमरूप कारण हुआ। उसमें अपवाद नहीं। कर्म का उदय होने पर भी, आत्मा वहाँ से हटकर आत्मा में जा सकता है। तो उदय नियमरूप कारण नहीं रहा। राग की उत्पत्ति में जयसेनाचार्य भगवान ने लिखा है कि कर्म का उदय नियमरूप कारण नहीं है। शुद्ध स्वभाव से च्युत होना नियमरूप कारण है। इसमें अपवाद नहीं है। अपने को भूल गया। स्वभाव से च्युत हो गया। मैं ज्ञाता हूँ, माना कर्ता, स्वभाव से च्युत हो गया। ज्ञाता नहीं रहा। मैं ज्ञाता हूँ होना चाहिए, रहना चाहिए। मगर मैं कर्ता हूँ, आहाहा!

अर्थात स्वयं अपनेको ललाई आदिरूप परिणमनका निमित न होने से, अपने आप रागादिरूप नहीं परिणमता, स्फटिकमणि की बात चलती है, किन्तु जो अपने आप रागादि भाव को प्राप्त होने से, आहाहा! दूसरा पदार्थ लिया अभी। नैमित्तिक पर्याय स्वभाव से च्युत होता है, तो नैमित्तिक पर्याय होती है। नैमित्तिक होती है तो उसमें निमित्त कारण आत्मा नहीं होता है और परिणमन भी निमित्त नहीं है। परद्रव्य निमित्त होता है। दो निमित्त का निषेध किया। त्रिकाल स्वभाव निमित्त नहीं होता है और उत्पाद व्यय भी

निमित्त नहीं होता है। आहाहा! और नैमित्तिक होता तो है और उसमें कर्म के कारण से राग होता है, ऐसा भी नहीं है। और नैमित्तिक हो भी, हुआ तो सही। उसका नियमरूप कारण तो ज्ञाता होने पर भी कर्ता मानता हैं। आहाहा! अकर्ता होने पर भी कर्ता मानता है। अपना उपयोग में भगवान आत्मा जानने में आ रहा है, उसको निषेध करता है कि मैं आत्मा को जानता नहीं हूँ। वो स्वभाव से च्युत हुआ तो बंध हो गया मिथ्यात्व की पर्याय प्रगट हो गई। मिथ्यात्व की पर्याय प्रगट हुई तो दर्शनमोह का कर्म का निमित्त कारण कहा जाता है। इधर से शुरू होता है, इधर से। वहां से नहीं होता है। कर्म के उदय से शुरूआत नहीं होती है। इधर से शुरू होता है। बंध की शुरुआत भी इधर से, मोक्ष की शुरुआत भी इधर से।

ज्ञाता को कर्ता माना तो बंध हो गया, मिथ्यात्व हो गया। शुद्ध को अशुद्ध मानना, परिपूर्ण को अपूर्ण मानना, अबन्ध को बंध मानना, स्वभाव से च्युत हो गया। जैसा स्वभाव है, वैसा नहीं मानना, उसका नाम भाव बंध है। वो भावबन्ध होता है तो निमित्त कारण होता है। भावबंध नहीं हो तो निमित्त का प्रश्न ही नहीं होता है। स्वभाव में निमित्त नहीं होता है। विभाव में निमित्त होता है। वो विभाव में निमित्त होने पर भी वो जो नैमित्तिक कर्म का उदय, वो नियमरूप कारण नहीं है। नियमरूप कारण स्वभाव से च्युत होना है। (श्रोता:- तजे शुद्धनय बंध, ग्रहे शुद्धनय मोक्ष) बस! वो बात चलती है! स्वभाव से च्युत होना वो ही नियमरूप कारण है, बस विभाव हो गया। जब विभाव हो गया तब विभाव में परपदार्थ निमित्त होता है। 'पर संग एव' पर पदार्थ निमित होता है, आत्मा निमित्त नहीं होता है। विभाव में आत्मा निमित्त नहीं होता है। और विभाव की उत्पत्ति का नियमरूप कारण कर्म का उदय भी नहीं है। स्वभाव से च्युत होना नियमरूप कारण है। इसमें है सब।

किन्तु जो अपने आप रागादि भाव को प्राप्त होने से, स्फटिक मणि को रागादि का निमित होता है, रागादि की लाल पर्याय होती है ना, उसका निमित्त कारण कौन? कि जो स्वयं फूल स्वयं अपने आप अपने स्वभाव से लाल है। वो तो लाल उसका स्वभाव से है। वो तो उसका स्वभाव है। इधर का लाल, वो तो विभाव है। उधर का लाल, वो तो स्वभाव है। इधर का लाल विभाव है। तो इधर का लाल विभाव हुआ उसका निमित्त कारण नियमरूप कारण नहीं है। वो कारण हो तो लाल ही होना चाहिए। होता नहीं है। समझे? और जो लाल पर्याय उत्पन्न होती है, उसका निमित्त कारण लाल फूल है, मगर उपादान कारण कौन? कि ये तत्समय की पर्याय। और पर्याय का कारण पर्याय नहीं है। अपने स्वभाव से च्युत हुआ। सूक्ष्म है। बराबर! ख्याल में आवे, बुद्धिगम्य है।

जैनदर्शन आगम से, युक्ति से, अनुमान से, अनुभव से सिध्द होता है। ऐसा हम कहे और तुम मान लो आचार्य भगवान ना कहते हैं। मैं कहूंगा मगर तेरे अनुभव से प्रमाण करना। मैं तो कहूंगा कि शक्कर मीठी है। मगर शक्कर मीठी है ऐसे नहीं मानना। जीव पर चखकर परीक्षा कर के प्रमाण करना। नहींतर तो कोई फिटकरी दे तो फिटकरी को शक्कर मान लेगा। मगर जीभ पर रखने के बाद फिटकरीवाला आवे, शक्कर के भाव में, ठहरो ठहरो चख लूँ। अरे! भाई चखने की जरूरत नहीं है। जो कहो तो मानता है, चखले तो लेगा नहीं। समझे? आहाहा! चखने की क्या जरूरत है? ऐसी शक्कर सफ़ेद है, ऐसे ही ये भी सफेद है। नहीं, वो सफ़ेद लक्षण नहीं है। अतिव्याप्ति दोष है उसमें। आहाहा! मैं बहुत प्रयोग नहीं करता, अव्याप्ति अतिव्याप्ति असंभव का। सादी भाषा एकदम। समझ में आती है।

एक भाई ने मेरे से कहा, मैं बहुत खुश खुश हो गया। युगल जी साहब बैठे थे एक भाई, उसने कहा अपनी बात, अपनी बीती कथा कही। आप-बीती। तो उसने कहा मैंने यहाँ आने का प्रोग्राम बना लिया, भिण्ड में। मगर एक भाई ने कहा कि वहाँ जाने जैसा नहीं है, क्योंकि लालचंदभाई की बात तो एकदम सूक्ष्म इतनी आती है कि कोई समझ नहीं सके, तू तो तेरी ताकत नहीं है। वहां तो तेरे को नींद आयेगी। सुनते-सुनते। और दूसरे दिन भाग जायेगा। अच्छा! उसने तो निर्णय किया था कि मेरे को जाना है। समजे! आया। सुनते सुनते सुनते सुनते, आहाहा! (भाव)विभोर हो गया। आहाहा! बाद में आया। मैं तो भाईसाहब! आज मेरे घर में आ गया। सब बात मेरे पल्ले पड़ गई। कोई नहीं समझ में आवे ऐसी कोई कड़क भाषा कोई संस्कृत भाषा, कोई माघदी भाषा, कोई व्याकरण, कोई अतिव्याप्ति, असंभव दोष, कोई नहीं। अनेकान्त, हेत्वाभास, वो विचार आता है कोई दोष की बात नहीं है। इधर गुणी और गुण की बात है। सब हमने पढ़ा है, सब पढ़ा है। सब जानते हैं। नहीं जानते हैं, ऐसा नहीं। पर प्रयोग नहीं करते। सामान्य जन समुदाय को ख्याल में नहीं आता। अभ्यासी को तो ख्याल में आवे।

अपनी बात है ना, विकथा तो नहीं है। विकथा तो मना है वहाँ। बोर्ड लगा था, मैंने तो पढ़ा। आहाहा! नहीं समझ में आवे ऐसी बात नहीं है। आत्मा सर्वतज्ञशक्ति से भरा हुआ है। अनंत-अनंत शक्ति से विराजमान आत्मा है। अनंत शक्ति सम्पन्न है। अपनी बात समझ में नहीं आवे? आहाहा! अपने बैंक बैलेंस में कुछ किसी को पूछना पड़े? अपने बैंक बैलेंस में किसी और को पूछे तो तो है। मैं क्या हूँ उसको जानने में क्या तकलीफ? आहाहा! में क्या हु उसको जाननेमे क्या तकलीफ?

किन्तु जो अपने आप रागादि भाव को प्राप्त होने से, स्फटिक मणि को रागादि का निमित होता है, ऐसे पर द्रव्य के द्वारा ही शुद्ध स्वभाव से च्युत होता हुआ ही, देखो! आहाहा! मैन चीज वो है। स्फटिक मणि अपने स्वभाव से यानि पर्याय स्वभाव से च्युत होता है। द्रव्य स्वभाव से कभी च्युत होता नहीं है। क्या कहा? अपना जो त्रिकाली शुद्ध स्वभाव सामान्य स्फटिक मणि का, उसका अभाव होकर लाल होता नहीं है। मगर पर्याय में जो स्वच्छता है, उस स्वच्छता को वो स्वयं छोड़ देता है। वो त्रिकाली जो शुद्ध है स्फटिक मणि, वो उसको छुड़ाता नहीं है और पर भी उसको छुड़ाता नहीं है। वो पर्याय की योग्यता से स्वयं स्वच्छता को छोड़कर लाल रंग रूप परिणमती है। आहाहा! तो स्वभाव से च्युत हो गई वो पर्याय। पर्याय अपने स्वच्छ स्वभाव से च्युत हो गई। यानि जो पर्याय का संबंध शुद्ध स्फटिक मणि के साथ था, वो संबंध तोड़ दिया तो शुद्धि आ गई। क्या कहा? उसको संबंध हुआ तो लाल हुआ ऐसा नहीं है। इसके साथ संबंध पर्याय का था, उसने तोड़ दिया। तोड़ दिया तो वहां जोड़ दिया तो वहां लाल हो गया। इधर तोड़ा तो लाल हुआ, बाद में वो जोड़ा (ऐसा) कहा जाता है।

जो पर्याय स्वच्छ थी, वो स्वच्छ पर्याय, स्फटिक मणि के साथ संबंध रखती थी। समझे? स्वतंत्र हैं ना, स्फटिक मणि की पर्याय भी स्वतंत्र है ना। उसका साथ संबंध स्फटिक मणि शुद्धता के साथ संबंध था। वो संबंध पर्याय ने वहाँ से च्युत हो गई, खिसक गयी, हट गई, अभेद में भेद कर दिया। अभेद में भेद कर दिया। स्फटिक मणि और स्फटिक मणि की पर्याय, वो स्फटिक मणि ही था, अभेद ही था। वहां से वो छूटी हो गई, समझे? वहां से पर्याय हट गई और यहां से जुड़ गई तो लाल रूप में परिणमती है पर्याय। इधर से हटी तब लाल हुआ, लाल जब हुआ तो वहां जुड़ती है। इधर से संबंध तोड़ा उससे संबंध जोड़ा।

मगर वहां से संबंध जोड़ा- वहां से नहीं लेना। इधर से संबंध तोड़ा- वहाँ से लेना। ये मूल कारण है। ये गाथा सरस है। स्वभाव से च्युत हुआ। आहाहा! इसका अर्थ है। हाँ! यहाँ से ज़रा छूटी पड़ी तो कहीं तो जुड़ेगी ना।

प्रश्नः- क्योंकि पर्याय किसी न किसी से तो अभेद रहेगी ही।

उत्तरः- हाँ! यहाँ से अभेद हुई, यहाँ से छूटी, तो फूल से अभेद हो गयी। तो लाल रंग रूप से परिणामित हो गयी। ये अभी सिद्धांत में आयेगा। अभी स्फटिक मणि की बात चलती है। स्फटिक मणि में तो ज्ञान नहीं है, तो जोड़ना-तोड़ना वो बात तो एक सामान्य समझाने के लिये। इधर से तोड़ना वहां से जोड़ना, उसमें तो नहीं है। मगर ज्ञान की पर्याय में तो तोड़ना और जोड़ना बन जाता है। इधर से तोड़ना वहां से जोड़ना, संसार हो गया वो तो। अभी सिद्धांत में आयेगा। सिद्धांत में सब आएगा।

शुद्ध स्वभाव से च्युत होने पर रागादि रूप में परिणमित होता है। यहाँ कहा ना, शुद्ध स्वभाव से च्युत हो गया, स्फटिक मणि का बिम्ब। उसकी जानकारी नहीं है, ज्ञान नहीं है तो भी च्युत होता है। जैसे जल है ना जल, गरम होता है ना, तो शीतल स्वभाव से च्युत हो गई पर्याय। शीतल स्वभाव का संबंध तोड़ा और अग्नि का संबंध जोड़ा, तो उष्ण हुआ। वहाँ से संबंध जोड़ती नहीं है पर्याय, इधर से तोड़ती है पहले। वो तो सेकेंडरी है वो तो सेकेंडरी है। आहाहा। पानी का द्रष्टांत से, समझ में आया? शीतल स्वभाव पानी था दल। उसकी पर्याय भी शीतल थी। और शीतल जो पर्याय थी वो शीतल स्वभाव से हट गई, खसक गई, तोड़ दिया संबंध। संबंध तोड़ा, तो अग्नि में जोड़ा, तो उष्ण हो गया। उष्ण का मूल कारण अग्नि नहीं है। अपना संबंध तोड़ना, स्वाभाव से, त्रिकाल स्वभाव से संबंध तोड़ना, पर के साथ संबंध जोड़ना आहाहा! वो ही उष्ण की पर्याय का कारण नियम है।

उस रीति से वास्तव में (गहराई में चले गयी) ऐसा विषय, अद्‌भुत, समयसार तो लगे हमको प्यारा। पूरा ब्रह्माण्ड इसमें भरा है। जितनी ताकत, इसमें से निकाल सके। पेतीस साल पहले मैं ईसरी गया था। तब गणेशप्रसाद जी वर्णी को १९ प्रश्न किया था। बाद में वो आहार के लिये चला गया। बाद में पाँच सात पंडित त्यागी वहां बैठे थे। मैंने कहा कि ये राग की उत्पत्ति का नियमरूप कारण क्या है, बताओ? कि कर्म के उदय से राग होता है। नहीं नियमरूप कारण नहीं है वो। राग की उत्पत्ति का नियमरूप कारण कर्म का उदय हो, तो वो पराधीन हो गई पर्याय। तो स्वाधीन रही नहीं पर्याय। बहुत चर्चा हुई मगर किसी से जवाब नहीं आया। बाद में एक पंडित आया- भाईसाहब आप कहो ना क्या नियमरूप कारण? स्वभाव से च्युत होना नियमरूप कारण है। स्वभाव को भूल जाना, अपने को आप भूले कि हैरान हो गया। आहाहा! जे स्वरूप समझे बिना पामे दुःख अनन्त। अनंत दुःख का कारण अपने स्वभाव को भूल गया। ज्ञाता को कर्ता माना, अबन्ध को बंध माना। आहाहा।

वास्तव में अकेला आत्मा, अकेला आत्मा, एकाकी, एकाकी है, पर का संग नहीं है उसको। कभी हुआ नहीं है। अपने परिणमन स्वभाववाला होने पर भी, एक तो अकेला है और परिणमन स्वभाव भी है, तो भी वो मिथ्यात्व का कारण होता नहीं है। आहाहा! बंध कहो कि मिथ्यात्व कहो। अपने शुद्ध स्वभाव के कारण। आत्मा तो त्रिकाल शुद्ध है। वो अशुद्धता का कारण होता नहीं है। रागादि का निमित्तपना नहीं होने से, राग का निमित्त कारण वो नहीं है। राग का निमित्त कारण आत्मा हो तो, आत्मा तो त्रिकाल है। त्रिकाल

रहनेवाला है। तो रागी होने लगे। तो आत्मा राग का कारण नहीं है। राग का उपादान कारण भी आत्मा नहीं है और निमित्त कारण भी आत्मा नहीं है। और उसका उपादान कारण उपादेय भी नहीं है। परिणमन स्वभाव, परिणमन स्वभाव तो सब में है। तो सब में एक जैसा मिथ्यात्व होना चाहिए। परिणमन स्वभाव नहीं है। आहाहा! अपनेको शुद्ध स्वभाव के कारण रागादिका निमितत्व न होनेसे, स्वयं अपनेको रागदीरूप परिणमन का निमित न होनेसे, अपने आप ही रागादीरूप नहीं परिणमता, सूर्यकांत मणि का द्रष्टान्त देते है, आगे आयेगा, आत्मा मिथ्यात्व रूप से अकेला-अकेला अपने आप परिणमन नहीं करता है। उसमें परसंग से उत्पन्न होता है। मगर परसंग निमित्त कारण है। निमित्त का प्रश्न पूछा। निमित्त का कारण पूछने पर उसको उपादान कारण लगा दिया। शुद्ध स्वभाव से च्युत हुआ, इधर से तोड़ा संबंध उधर से जोड़ा।

उपयोग में आत्मा जानने में आने पर भी, उपयोग में प्रत्येक जीव को प्रत्येक समय पर भगवान आत्मा जानने में आने पर भी, वो उपयोग में आत्मा जानने में नहीं आता है। ऐसा माना, तो ज्ञान ने ज्ञायक से अभेद होने पर वहां से संबंध तोड़ दिया। द्रव्य के साथ पर्याय का संबंध समय-समय तोड़ता है। समय-समय तोड़ता है और पर से जोड़ता है। समय-समय अभेद होने पर भी भेद कर के तोड़ता है। आहाहा! उपयोग में आत्मा जानने में आने पर भी समय-समय पर, मेरे को, ज्ञानी को आत्मा जानने में आता है, हम तो अज्ञानी हैं। ऐसा है नहीं। प्रत्येक जीव को प्रत्येक समय पर अपना भगवान आत्मा जानने में आ रहा है। न बोले तो भी जानने में आ रहा है, हां बोले तो भी जानने में आ रहा है। आहाहा! तो ऐसे अपनी ज्ञान की पर्याय में ज्ञायक आत्मा जानने में आ रहा है। वो अभेदरूप जानने में आ रहा है। वो भी अभेदरूप अनन्यरूप जानने में आ रहा है। ज्ञान की पर्याय उधर और ज्ञायक इधर, वो ज्ञान की पर्याय इसको जानता है- ऐसा नहीं है, ऐसा नहीं है। वो उपयोग आत्मा से अनन्य है। आत्मा से अनन्य होकर अनन्यरूप जानता है। ऐसा अनन्य स्वभाव होने पर भी, उसको पर्याय को वो भेद करके तोड़ देता है, संबंध। कि पर जानने में आता है। तो स्व जानने में आने पर भी संबंध तोड़ा इधर और पर के साथ संबंध जोड़ा कि पर जानने में आया, उसका नाम अज्ञान है, मिथ्यात्व है।

अभेद में भेद करे तो इधर से संबंध टूटता है और पर के साथ संबंध जुड़ता है। अभेद में अभेद नहीं रहता है आत्मा तो, अभेद ही रहता है, उपयोगमयी आत्मा है। उपयोग में उपयोग है, उपयोग में राग है ही नहीं। उपयोग में जो उपयोग दिखाई देवे, तो सम्यग्ज्ञान है और उपयोग में राग दिखाई देवे, तो मिथ्याज्ञान हो गया। इधर से संबंध तोड़ दिया ना। यानि राग जानने में आता है इसलिए बंध नहीं। आत्मा को नहीं जानता है इसलिए बंध है। क्या कहा? क्योंकि उसमें नियम नहीं रहा। क्योंकि ज्ञानी तो राग को जानता है तो भी बंध होता नहीं है। क्योंकि स्वभाव से च्युत होता नहीं है। राग को जानता है तो भी बंध होता नहीं है। आता है ने ७५ वी गाथा में रागी तो पुद्गल है। जाना कि नहीं उसने? तो राग को जानने से भावबन्ध होता नहीं है। अपने स्वभाव से च्युत होता है, तो भावबंध होता है- मूल बात है।

ज्ञायक जानने में नहीं आता है, मुझे ये बंध हो गया। अरे! ज्ञायक जानने में आता नहीं तो सेकन्डेरी में क्या आया? कि पर जानने में आता है। तो पर जानने में आता है, जिससे इसलिए बंध होता है- ये निमित्त प्रधान कथन है उपादान प्रधान कथन तो यहाँ से छूटा तो ही बंध का कारण है। ये संध्या का घर है ना। शिकोहाबाद भाग्यशाली है। संध्या का घर है।

क्या कहते हैं? फरमाते हैं। शुद्ध स्वभाव से च्युत बस ये नियमरूप कारण हुआ। पर को जानने से बंध होता नहीं है। क्योंकि व्यवहारनय जाना हुआ प्रयोजनवान है, तो बंध होना चाहिए। पर को जानने से बंध नहीं होता है। स्व को नहीं जानने से बंध होता है। स्व को नहीं जानना वो बंध का कारण, निमित्त हुआ। तो पर को जानने से बंध, अध्यवसान होता है। धर्मास्तिकाय को जानने से अध्यवसान होता है। वो दूसरी बात है। वो धर्मास्तिकाय को जब जानते हैं, तब अपने को जानने को भूल गया वो मिथ्यात्व का नियमरूप कारण है। वो तो निमित्त कारण है। सब गुरुदेव का प्रताप है। अपनेको शुद्ध स्वभाव के कारण रागादिका निमितत्व न होनेसे, अकेला-अकेला आत्मा राग का निमित्त कारण हो, तो मिथ्यात्व होना ही, अनादि अनंत, छूटे ही नहीं। और (जो) कर्म के उदय से मिथ्यात्व हो तो पराधीन हो जाये। और परिणमन स्वभाव मिथ्यात्व हो तो परिणमन स्वभाव तो स्वभाव है। वो तो सिध्द में भी है। आहाहा! त्रिकाल स्वभाव कारण नहीं, उत्पाद-व्यय कारण नहीं, परपदार्थ भी नियमरूप कारण नहीं, कारण हैं, मगर नियमरूप नहीं। कारण तो है- निमित्त कारण। हाँ! अभी एजेंडा पर ये है। नियमरूप कारण। राग को जाननेसे बंध होता नहीं, होता है? नहीं। आहाहा! स्वभाव से च्युत हुआ तो बंध हो जाता है। हां! वो ही निमित्त कारण को जानता है। निमित्त कारण कौन जानता है? कि जो नियमरूप कारण जानता है। ये लिखा है ना कि शुद्ध स्वभाव से च्युत होता हुआ, वो जानता है उसने लिखा। कोहिनूर का हीरा रख दिया।

श्रोता:- ये मूल कारण की खबर पड़े तो ये बंध रहे ही नहीं।

उत्तर:- अरे! मेरे ज्ञान में आत्मा जानने में आ रहा है, मैं ना कैसे कहूँ? ना कहूँ तो मिथ्यात्व का दोष आ जाये। पर को जानता है इसलिए मिथ्यात्व है, वो नियम नहीं। इधर (स्व) को नहीं जाना तो अध्यवसान हुआ। और अध्यवसान कब हुआ? कि पर को जानने से हुआ। वहाँ से समझाया जाता है। है तो मूल उदभव स्थान यहाँ। उदभव स्थान तो अंदर में है। शॉर्ट में कहना पड़े कि धर्मास्तिकाय को जानता हूँ तो अध्यवसान हो गया। मगर अध्यवसान का मेन कारण तो अपने स्वभाव से च्युत हुआ। जाननहार को नहीं जाना और जो जिसका ज्ञान का नहीं है, उसको जानने में गया। इधर से छूटा और वहाँ से जुड़ा तो बंध हो गया। निमित्त कारण की सिद्धि करते करते भी शुद्ध स्वभाव से च्युत होता है। मूल कारण ले लिया। आहाहा! ये तो समयसार है। आहाहा! गूढ़ है। गुरुगम से जाननेमे आता है। श्रीमद जी ने लिखा है कि द्रव्यानुयोग अति सूक्ष्म है। वो अपनी योग्यता और गुरुगम से ख्याल में आता है।

जिन प्रवचन गुरुगम्यता, थाके अति मतिमान।
अबलम्बन श्री सद्‌गुरु, सुगम अने सुखधाम ।
आगम का मर्म ज्ञानी के हृदय में है।

अपनेको शुद्ध स्वभाव के कारण रागादिका निमितत्व न होनेसे, स्वयं अपनेको रागदीरूप परिणमन का निमित न होनेसे, अपने आप ही रागादीरूप नहीं परिणमता, आहाहा! राग का निमित्त कारण आत्मा नहीं और परिणमन स्वभाव भी नहीं। कर्म का उदय नियमरूप कारण, ये तो निमित्त कारन है। तो नियमरूप कारण कौन? कि शुद्ध स्वभाव से च्युत हुआ कि मेरा आत्मा मेरे को जानने में आता नहीं है। बस, वो अज्ञान हो गया! मेरा आत्मा मेरे को जानने में नहीं आता है। वो तो ज्ञानी को जानने में आवे मैं तो अज्ञानी हूँ। नहीं तू अज्ञानी नहीं है। तेरे अंदरमें समय समय पर उत्पाद व्यय उपयोग लक्षण

प्रगट होता है। ज्ञान प्रगट होता है। वो ज्ञान ज्ञायक से अनन्य होने से निरंतर जानने में आ रहा है। नकार न कर, नकार न कर। हकार कि जाननेवाला जानने में आता है। जाननहार जानने में आ रहा है। जानना नहीं है जानने में आ रहा है। जानना नहीं है। जानने में आ रहा है। आहाहा! उपयोग में आत्मा जानने में आ रहा है। उसमें पुरुषार्थ की जरूरत नहीं। स्वीकार करे, उसका नाम पुरुषार्थ है। उसमें पुरुषार्थ क्या? उपयोग में तो आत्मा जानने में सबको आ रहा है, वो तो स्वभाव है। स्वीकार करना, उसका नाम पुरुषार्थ है। नकार करना स्वभाव से च्युत हो गया मिथ्यात्व और दर्शनमोह के उदय को निमित्त कारण कहा जाता है। वो बाद की बात है।

प्रश्नः- निमित्त कारण की चर्चा करना नियमरूप कारण नहीं।

उत्तरः- हाँ! यहाँ प्रश्न पूछा है निमित का, नैमित्तिक कब होता है कि स्वभाव से च्युत हो तब। नैमित्तिक का कारण स्वभाव से च्युत। नैमित्तिक का कारण स्वभाव से च्युत होना वो नियमरूप कारण है। निमित्त की बात बाद में करो। गुरुदेव फरमाते थे कि ऐसी टीका न भूतो न भविष्यती। भविष्य में भी ऐसी टीका, आहाहा! गुरुकृपा है।

अपनेको शुद्ध स्वभाव के कारण रागादिका निमितत्व न होनेसे, स्वयं अपनेको रागदीरूप परिणमन का निमित न होनेसे, अपने आप ही रागादीरूप नहीं परिणमता, यानि ये आत्मा राग का निमित्त कारण नहीं होता है। राग का निमित्त कारण पर है और राग नैमित्तिक, कर्म का उदय निमित्त, मगर नैमित्तिक का कारण क्या? कि अपने स्वभाव से च्युत होना है। अपने आप ही रागादीरूप नहीं परिणमता, परंतु जो अपने आप रागादि भाव को प्राप्त होने से आत्माकों रागादिका निमित्त होता है। पर निमित्त होता है कभी? कि नैमित्तिक प्रगट हो तभी। नैमित्तिक कब प्रगट होता है? कि स्वभाव से च्युत होता है तभी। मैं मेरे को नहीं जानता हूँ, मैं मेरे को नहीं जानता हूँ। मैं मेरे को नहीं जानता हूँ, उसका नाम अज्ञान, उसका नाम नैमित्तिक, उसका नाम मिथ्यात्व। तब दर्शनमोह का कर्म का निमित्त कारण कहने में आता है। मत बोल मैं मेरे को नहीं जानता हूँ, मत बोल। आज से बंद कर दे। जाननहार जानने में आता है। जाननहार जानने में आ रहा है समय-समय पर। ये चील को भी हिरण मेंढक साँप, कीड़े-मकोड़े सबको भगवान आत्मा जानने में आ रहा है। बिना पुरुषार्थ जानने में आ रहा है। ना कहे तो भी जानने में आवे, हाँ कहे तो भी जानने में आ रहा है। जानना छूटता नहीं, जानना छूटता नहीं, और जानने में आना भी छूटता नहीं। जानना भी नहीं छूटता, जानने में जो आ रहा है, वो भी छूटता नहीं है। जानन क्रिया जानने को छोड़ता नहीं है और जनानेवाला छोड़ता नहीं है। ऐसा संबंध है, ऐसा संबंध है। तात्विक संबंध है, वो छूटता नहीं है। ज्ञायक से ज्ञान जो छूटा हो जाये तो ज्ञायक भी न रहे और ज्ञान भी नहीं रहे।

अपने आप ही रागादीरूप नहीं परिणमता, परंतु जो अपने आप रागादि भाव को प्राप्त होने से, कर्म में राग है। जड़ कर्म है उसमें राग का अनुभाग है, निमित्त में। ईधर नैमित्तिक रागरूप होता है। नैमित्तिक रागरूप कब होता है? कि स्वभाव से च्युत होवे तब। तो राग उत्पन्न हुआ नैमित्तिक। तो नैमित्तिक राग होये तो उसमें आत्मा निमित्त नहीं है, 'परसंग एव' पर पदार्थ निमित्त होता है। पर पदार्थ का लक्ष्य होता है। राग में पर का लक्ष्य जाता है, वीतराग भाव में स्व का लक्ष्य।

परंतु जो अपने आप रागादि भाव को प्राप्त होने से, आत्माको रागादि का निमित्त होता है वो।

उपादान कारण नहीं है। निमित्त कारण है। उपादान कारण तो अशुद्ध उपादान, क्षणिक पर्याय, नैमित्तिक, नैमित्तिक का कारण मैं मेरे को नहीं जानता हूँ, मैं मेरे को नहीं जानता हूँ। ज्ञानी को आत्मा जानने में आवे, मैं तो अज्ञानी हूँ। मैं तो पढ़ा-लिखा नहीं हूँ। हमारा माता बहिन कहें कि मैं तो क ख ग घ को जानता नहीं हूँ, A B C D भी जानता नहीं हूँ। मेरे को आत्मा का ज्ञान, अरे! मेरा आत्मा ही ज्ञान में जानने में आ रहा है। ना मत कहो। ना मत कहो। सर्वज्ञ भगवान का फरमान है कि सब जीवों के ज्ञान में भगवान आत्मा जानने में आ रहा है। सीमंधर भगवान की वाणी में आया है। जाननेवाला ही जानने में आता है। आहाहा! जाननेवाला ही जानने में आ रहा है। जानने में आएगा ऐसा नहीं आया। जानने का प्रयत्न करो ऐसा भी नहीं। बिना प्रयत्न। आहाहा! सूर्य के प्रकाश में सूर्य प्रसिद्ध हो रहा है। सूर्य के प्रकाश में सूर्य अनन्य प्रसिद्ध हो रहा है। तो कोई कहे कि ये प्रकाश आया तो अभी मकान दिखा दिया, मकान, तो ये जो पर्याय है, च्युत हो गई। तो सूर्य के त्रिकाल स्वभाव से च्युत हो गई। इससे संबंध तोड़ा और घड़े से सम्बन्ध जोड़ा। तो सूर्य भी नहीं रहा और प्रकाश भी नहीं रहा। मगर ऐसा बनता तो नहीं है। पीछे हट पीछे हट पीछे हट, हट पीछे हट कि ज्ञान में आत्मा जानने में आ रहा है। आहाहा!

धर्म तो सरल है, अज्ञानी ने गड़बड़(कर दी) ऐसा करो ऐसा करो। ये छोड़ो, ये ग्रहण करो, ये छोड़ो, आहाहा! करो करो करो करो में ही मर जाता है। और कार्य सिद्धि होती नहीं है। जानूँ जानूँ जानूँ जानूँ ऐसा ले ले ना। जानूँ जानूँ ले। किसको जानूँ? जाननहार को जानूँ। बस हो गया। जो जानने में आ रहा है उसको जानूँ आहाहा! जो जानने में आ रहा है उसको जानूँ ये उपदेश कथन है। उपदेश कथन है। बाकि तो जानने में आ ही रहा है। स्वीकार कर ले। हाँ कर, तो हालत हो जाएगी। हाँ तो पाड़, हालत हो जाएगी। इतनी देर है। तेरी देर की देर है, तेरी देर की देर है। ऐसी कहावत है हमारे 'तेरी देर की देर है'। हाँ तो पाड़। आहाहा! हम तो तैयार हैं। दर्शन देने के लिये तैयार हैं। लेनेवाला चाहिए। लेता है तो भगवान हो जाता है। भगवान के दर्शन से धर्म होता है। ये भगवान का। आहाहा!

परंतु जो अपने आप रागादि भाव को प्राप्त होने से, आत्माको रागादि का निमित्त होता है,ऐसे परद्रव्य के द्वारा ही, निमित प्रधान कथन है, कर्ता-कर्म संबंध नहीं है। निमित्त कर्ता। इससे नहीं। आत्मा से नहीं। इतना बताने के लिये उसके द्वारा कहा, उसमें मर्म है। ऐसे परद्रव्य के द्वारा ही, शुद्ध स्वभाव से च्युत होता हुआ ही, आहाहा! कोहिनूर का हीरा है। शुद्ध स्वभाव से च्युत होना यानि मेरा आत्मा मेरे को जानने में नहीं आया, वो शुद्ध स्वभाव से च्युत हो गया, भ्रष्ट हो गया। च्युत यानि भ्रष्ट हो गया, बाहर निकल गया। रागदीरूप परिणमित किया जाता है! ऐसा वस्तु स्वभाव है! भिण्ड का सार है। समझ में आ जाये। वो तो समझाने की बात है। परसन्मुख उपयोग है, आत्मसन्मुख करो। उपदेश बहुत ऐसा ज्ञानी ने दिया। मूल बात है। जिनवाणी की स्तुति बोलो!

ॐ

Version 1: http://AtmaDharma.com or http://AtmaDharma.org Please report errors to rajesh@AtmaDharma.com